पद १६१

(राग: यमन जिल्हा - ताल: धुमाळी)

गायी गायी मना रे हरीचे गुण गायी ।।ध्रु.।। एक्या भावे तत्पर होउनी। त्यजुनी सकल कल्पना रे।।१।। जातसे दिन दिन व्यर्थिच वायां। नये नरदेह पुन्हा रे।।२।। माणिक म्हणे मना नामप्रतापें। चुकती यमयातना रे।।३।।